शांतिवन-आबू रोड। 44वें 'माइंड-बॉडी मेडिसिन' कॉन्फ्रेन्स का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, अति. महासचिव राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन भाई, संयुक्त मुख्य प्रशासिका ब्र.कु. डॉ. निर्मला दीदी, ग्लोबल अस्पताल के निदेशक डॉ. प्रताप मिड्ढ़ा, ब्र.कु. डॉ. बनारसी लाल शाह, डॉ. सतीश गुप्ता, ब्र.कु. सरला दीदी, ब्र.कु. गीता दीदी तथा अन्य।

कर्वेनगर-पुणे(महा.)। 'आनंदी कट्टा' नामक व्हाट्सएप्प ग्रुप द्वारा आयोजित 'इंद्रधनू-विविध गुण दर्शन' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. नीरू बहन, ब्र.कु. कौशल्या बहन, ब्र.कु. रेशमा बहन, जलगांव की कवयित्री बहिणाबाई चौधरी, उत्तर महा. विद्यापीठ के प्रोफेसर ब्र.कु. डॉ. सोमनाथ वडनेरे, ब्र.कु. माधुरी बेलसरे माता तथा कार्यक्रम का संचालन करते हुए ब्र.कु. डॉ. शीतल डोलारे।

कोई भी कार्य शुरू करने से पहले...

कोई भी कार्य शुरू करने से पहले और कोई भी कार्य पूरा करने के बाद एक मिनट साइलेंस में ज़रूर बैठें। क्यों साइलेंस में बैठना चाहिए, क्या होगा उससे? एक मिनट साइलेंस में बैठना मतलब परमात्मा से कनेक्ट होना। उससे बात करना, उससे राय लेना, और उसकी एनर्जी को अपने कर्म में इनवाइट(आमंत्रित) करना। जैसे आप किचन में खाना बना रहे हैं और उस समय आपके साथ कोई बड़ा, अपने से अनुभवी खड़ा है तो आप एक मिनट उसकी तरफ देखते हैं ना और फिर उनसे पूछते हैं कि हम ठीक कर रहे हैं कि नहीं! करते हैं ना ऐसा! वो कहते कि सब ठीक है। तो उनसे राय लेने से क्या हो गया? बड़े खड़े थे तो उनसे राय लेने से क्या हुआ? क्यों राय लें? रोज़ तो खाना बनाते हैं तो उनसे राय लेने से क्या हुआ? चेक करो। आप कोई काम कर रहे हैं और आपके साथ कोई बड़े खड़े हैं चाहे वो किचन में हैं, चाहे ऑफिस में हैं। कितने भी हम बड़े हो जायें हम अपने पैरेन्ट्स से पूछते हैं कि ये ठीक है? हाँ ठीक है। 30 सेकंड, ये ठीक है? हाँ ठीक है। बिना पूछे भी कर सकते थे। लेकिन पूछा उससे क्या फायदा हुआ? एक विश्वास हो गया कि हम सही कर रहे हैं।

एक चीज़ जीवन में ध्यान रखनी है अगर जीवन में खुश रहना चाहते हैं तो ये हमें हमेशा ध्यान रखना है कि हमारे किसी भी कर्म से कोई डिस्टर्ब नहीं होना चाहिए। किसी का मन थोड़ा भी हिले नहीं, अगर किसी और का मन मेरे किसी कर्म से अशांत हुआ तो मेरा शांत रहना डिफिकल्ट(मुश्किल) है। सिम्पल चीज़ देखो आप मार्केट में जाते हैं और आपको लगता है कि दो मिनट में आ जायेंगे, गाड़ी-स्कूटर यहीं लगाकर फटाफट जाकर आते हैं। दो लोगों को गाड़ी को ब्लॉक कर दिया। करते समय किसके बारे में सोचा? अपनी सुविधा के बारे में सोचा। वो लोग बाहर आ जायेंगे वो पाँच मिनट में हमें क्या देने वाले हैं? दो महीने बीत जायेंगे उसके अपॉज़िट दुआयें कमाने में। किसी से भी छोटे से छोटे या बड़ा तो कहे बिल्कुल नहीं। छोटे से कर्म में भी किसी से दुआओं की अपॉज़िट एनर्जी आनी नहीं चाहिए और अगर हर कर्म में दुआओं की एनर्जी आती रही तो खुश रहने के लिए कुछ करना नहीं पड़ेगा। तो अगर कुछ भी कर रहे हैं तो अपने फायदे से पहले किसका फायदा सोचो? मेरे इस कर्म से तो जब सब सुखी, शांत होंगे, मन सबका संतुष्ट होगा उनसे हमें कौन-सी एनर्जी मिलेगी? दुआएं। हमें ये ध्यान रखना है कि हमें कोई भी कर्म करने से पहले

ब्र.कु. शिवानी, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

सिर्फ अपना फायदा नहीं सोचना। अपने से ज़्यादा मेरी वजह से किसी और का मन डिस्टर्ब न हो ये ध्यान रखके जो आत्मा कर्म करेगी उसको सबसे दुआएं मिलती रहेंगी। आज कलियुग सिर्फ क्यों कलियुग बना क्योंकि हम सारा दिन धन कमाने के बारे में सोच रहे हैं अगर हम दुआएं कमाने के बारे में सोचेंगे तो बहुत जल्द सतयुग बन जायेगा। जैसा कर्म करेंगे वैसा फल मिलता जायेगा।

अब सबकी दुआओं के साथ-साथ हमें परमात्मा की दुआएं भी लेनी हैं। जब हम अपने बड़ों से राय लेते हैं ऐसा करें? तो वो ठीक है बोलते हैं बस, लेकिन वो ठीक है के साथ अपनी दुआएं दे देते हैं उस कर्म में। तो इसी तरह अगर हम हर बात परमात्मा से पूछ-पूछ कर करें। हम इधर जा रहे हैं, आज हमारी ये मिटिंग है, आज हम ये काम करने वाले हैं, आज हम इनसे मिलने वाले हैं, सबकुछ उनको बताओ। अगर हम कोई ऐसा काम करने जा रहे हैं जो हमारे लिए सही नहीं है तो वो हमें टच कर देगा कि इधर नहीं जाना, ये नहीं करना। ये है मेडिटेशन। मेडिटेशन मतलब परमात्मा के साथ एक डायरेक्ट पर्सनल रिलेशनशिप। जहाँ हम भी बात करेंगे और वो भी हमसे बात करेगा।

क्या बिना शब्दों का इस्तेमाल किये बात की जा सकती है? कभी-कभी हम किसी को याद करते हैं और वो भी हमें उसी समय याद करते हैं। फोन करने का सोचा तो इतने में सामने से फोन आ जाता है। हमारे माइंड में कोई सवाल था उन्होंने पहले से ही उत्तर दे दिया। तो फिर उनसे पूछेंगे कि आपको कैसे मालूम कि मैं अभी यही सोच रहा था या मेरे माइंड में यही बात चल रही थी। पहला सम्पर्क, थॉट दूसरों को पहुंचते हैं। दूसरा सम्पर्क, शब्द दूसरे सुनते हैं और तीसरा सम्पर्क व्यवहार सारे देखते हैं। लेकिन सबसे सूक्ष्म सम्पर्क हम जो सोचते हैं वो दूसरे को पहुंचता है और दूसरे जो सोच रहे हैं वो हम तक पहुंचता है। तो जब हम एक-दूसरे से थॉट के साथ सम्पर्क कर सकते हैं तो हम परमात्मा के साथ नहीं कर सकते! कर सकते हैं। जो भी मन में बात हो उससे करना।

हमने जाना कि परमात्मा निराकार है कोई देहधारी नहीं, लेकिन फिर भी वो सदा हाज़िर है। हम परमात्मा को बहुत प्यार से बाबा कहते हैं। बाबा मतलब पिता। बाबा कहते मैं बैठा हूँ,मुझे यूज़ करो। परमात्मा को सूर्य की तरह देखते हैं सूर्य बैठा है वो अपनी लाइट और अपनी पॉवर दे रहा है वो हमारी च्वाइस है कि उसकी लाइट और पॉवर को कितना यूज़ करना है। कोई धूप में बैठकर उसकी लाइट और पॉवर को ले रहे हैं। कोई उसकी पॉवर लेकर खाना बना रहा है। और कोई खिड़की बंद करके, टयूब लाइट जलाकर एसी ऑन करके बैठे हैं। उसकी लाइट एंड पॉवर को यूज़ नहीं कर रहा है। फिर उसके बाद विटामिन डी की कमी हो जाती है। तो जैसे वो सूर्य है वैसे परमात्मा भी सूर्य है। कौन-सा सूर्य है? ज्ञान का सूर्य है, शांति का सूर्य है। उससे मांगना नहीं होता कि हमें दो। हम कभी सूर्य से लाइट मांगते हैं कि दो? क्योंकि वो तो दे ही रहा है। और परमात्मा से शांति दो, शक्ति दो, प्यार दो ये सब मांगना शुरू कर देते हैं। तो उससे मांगना नहीं है वो दे रहा है बस हमें लेना है। लेकर उसको अपने जीवन में यूज़ करना है। जब यूज़ करेंगे तो खुशी और शांति की कमी पूरी हो जायेगी। परमात्मा कांस्टेंट(स्थिर) एनर्जी है। ये हमारी च्वाइस है कि हम उसे कब-कब याद करते हैं और कब-कब उससे बात करते हैं।

पुणे-रविवार पेठ(महा.)। आज़ादी के अमृत महोत्सव एवं स्थानीय सेवाकेन्द्र के रजत जयंती महोत्सव के तहत पुणे महानगरपालिका के नवनियुक्त अति. आयुक्त विलास कानडे को ईश्वरीय सौगात भेंट कर बधाई देते हुए ब्र.कु. रोहिणी बहन। साथ हैं महानगरपालिका के भवन रचना की अधिकारी श्रीमति लीला परदेशी तथा अन्य।

नरसिंहपुर-म.प्र.। विश्व परिवार दिवस पर ब्रह्माकुमारीज़ के दिव्य संस्कार भवन में आयोजित कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज़ की जिला संचालिका ब्र.कु. कुसुम दीदी, जगदीश हॉस्पिटल से डॉ. राजश्री पटेल तथा इस दौरान सेवाकेन्द्र में चल रहे समर कैम्प में शामिल बच्चे और उनके माता-पिता सहित अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें शामिल रहे।

आवश्यकता

निम्नलिखित पदों पर ग्लोबल अस्पताल मा.आबू एवं आबूरोड में सेवा(जॉब) हेतु डॉक्टर्स तथा भाई-बहनों की आवश्यकता है-

1. जनरल एवं लैप्रोस्कोपिक सर्जन - MD/DNB(Gen. Sur.)
2. पैथोलॉजिस्ट - MD/DNB(Pathology)
3. लैब टेक्नीशियन - D.M.L.T.
4. लेक्चरर, नर्सिंग कॉलेज के लिए - MSc (Nursing) in Medical Surgical Nursing

उचित वेतन सुविधा, संपर्क करें -
9414374589
ई.मेल - ghrchrd@ymail.com

समय के गणित...

- पेज 3 का शेष...

हर वक्त योग-योग की बात करना हमारे मन को अखरता है। हम तो ऐश करने वाले जीव हैं और हम से ज़्यादा रस्साकशी नहीं होती"। इस प्रकार अधिक समय मिलने के बावजूद भी उनका काफी समय तो अलबेलेपन के कारण ईश्वरीय कमाई के बिना ही निकल जाता है। अलबेलेपन के स्वभाव वाले व्यक्ति को यदि 50 वर्ष भी इस पुरूषार्थ के लिए मिलें तो उसके कम से कम 8-10 वर्ष तो यह अलबेलापन ही खा जायेगा। 5 वर्ष तो आलस्य, अलबेलेपन में गँवा बैठता है और इस प्रकार शेष उसके 35-37 वर्ष रह जाते हैं।

बीती बातों को याद करना

ऐसे भी व्यक्ति होते हैं जो भगवान को याद करने की बजाए बीती बातों का चिन्तन करते रहते हैं, 'अमुक व्यक्ति ने फलाँ अवसर पर फलाँ बात कही थी जो कि बिल्कुल ही घटिया थी; तब उसका व्यवहार बहुत खराब था...", वे इस प्रकार सोचते रहते हैं। वे इन्हीं बातों को सोचने में समय निकाल देते हैं। 'पास्ट को पास्ट' करके वे पास विद् ऑनर्स होने का पुरूषार्थ नहीं करते। परिणाम यह होता है कि जीवन का अनमोल समय भूतकाल के भूतों के वश ही कट जाता है। इस प्रकार 50 वर्षों में जो 22 वर्ष रहे थे, उनमें 7-8 वर्ष तो पुरानी बातों में लग जाते हैं। आगे बढ़ने की बजाय वो पुरानी बातों के कब्रिस्तान खोदे खड़े रहते हैं। यदि 22 वर्षों में से 8 वर्ष इस तरह निकल जायें तब बाकी तो केवल14 वर्ष ही बचते हैं।

व्यर्थ बातें सुनना और करना

कुछ व्यक्ति दूसरों से व्यर्थ बातें सुनने का चस्का लेते हैं। जब तक वे इधर-उधर का, किसी के मरने का, किसी के घायल होने का, किसी को व्यापार में हानि होने, किसी की दुर्घटना होने इत्यादि का समाचार नहीं सुन लेते हैं, उन्हें न नाश्ता अच्छा लगता है, न खाना हज़म होता है। मसालेदार बातें सुनने की उनको आदत पड़ जाती है। इस तरह तो गोया उसके तीव्र पुरूषार्थ का समय ही नहीं बचता। इस प्रकार 5-6 वर्ष भी उसके कम हो जायें तो 14 में बाकी 9 वर्ष ही शेष रहते हैं।

इस प्रकार कुछ और भी कारण हैं जिनसे समय की बहुत हानि होती है और दीर्घकाल समय मिलने के बावजूद भी उनका समय बहुत कम रह जाता है।